218

लोक-साहित्य पुस्तकमाला —संख्या १

बुन्देलखंड के प्रसिद्ध लोक-कवि ईसुरी
के गीतों का प्रामाणिक संग्रह
(कवि-परिचय सहित)

[भाग १]

८९१.५
ईसु ई-१

र्त्ता परिषद्
टीकमगढ़

लोक साहित्य पुस्तकमाला
संख्या १

डा० धीरेन्द्र वर्मा पुस्तक-संग्रह

ईसुरी की फागें

भाग १

प्रकाशक
कृष्णानंद गुप्त
लोकवार्त्ता परिषद्, टीकमगढ़ सी० आई०

मूल्य १।)

मुद्रक
पं० भृगुराज भार्गव
भार्गव-प्रिंटिंग-वर्क्स, लखनऊ.

कवि-परिचय

कवि ईसुरी के जीवन और काव्य की विशद आलोचना के लिए यहाँ स्थान नहीं। उस विषय में अलग से एक पुस्तक प्रकाशित हो रही है। यहाँ तो थोड़े में हम पाठकों को उनका परिचय दे रहे हैं।

ईसुरी का जन्म मऊरानीपुर (झाँसी) के निकट मेंड़की नामक ग्राम में हुआ था। उनका पूरा नाम था—ईश्वरीप्रसाद। वे जिझौतिया ब्राह्मण थे। उनके पूर्वज लगभग दो सौ वर्ष पूर्व ओरछा से मेंड़की में आकर बसे थे। वहाँ उनका पैतृक घर मौजूद है। इन पंक्तियों के लेखक ने कई बार वहाँ की यात्रा की है। वहाँ के निवासी 'ईसुरी बब्बा' के नाम से अपने गाँव के इस लोक-कवि का सादर स्मरण करते हैं। मेंड़की के श्रीगयाप्रसादजी पाठक ईसुरी के मित्रों में से थे। अभी दो वर्ष पहले जब हमने उनसे भेंट की तब वे बहुत दुर्बल और रोगशय्या ग्रस्त थे। परन्तु यह मालूम होने पर कि हम उनके पास ईसुरी के विषय में कुछ जानकारी प्राप्त करने आये हैं, न जाने कहाँ से उनमें स्फूर्त्ति का संचार हो गया। उठकर बैठ गये, और हमारे बार बार मना करने पर भी लगातार एक घण्टे तक ईसुरी की फागें सुनाकर हमारा मनोरंजन करते रहे।

ईसुरी तीन भाई थे। सदानन्द, रामदीन और ईसुरी। सदानन्द के पुत्र श्री दुर्गाप्रसादजी जीवित हैं और सीपरी बाज़ार, झाँसी के एक मन्दिर में पुजारी हैं। रामदीन के पुत्र नत्थू मेंढ़की में रहकर कृषि कार्य करते हैं।

ईसुरी का बचपन अपने मामा के यहाँ लुहरगाँव (कौनिया, हरपालपुर) में बीता। उनके मामा के पहले कोई संतान नहीं थी। इसलिए उन्होंने इनको गोद ले लिया था। बाद, उनके पुत्र उत्पन्न होने पर ईसुरी कुछ दिनों वहाँ रहकर अपनी ससुराल सीगोन चले गये। यह स्थान हमीरपुर ज़िले में बगौरा नामक ग्राम से, जहाँ कि बाद में ईसुरी के जीवन का शेष समय बीता, एक मील दूर है। उनकी पत्नी का नाम स्यामबाई था। उससे केवल एक लड़की हुई। वह धवार ब्याही थी। नाम था गुरनबाई। उसके कोई संतान नहीं हुई और वह भी अब नहीं है। ईसुरी जब तीस वर्ष के थे तभी उनकी पत्नी की मृत्यु हो गई थी। फिर उन्होंने दूसरा विवाह नहीं किया।

सीगोन में कुछ दिनों रहकर वे धौर्रा के मुसाहिब जू नामक एक ज़मींदार के यहाँ नौकर हुए। फिर रानी दुलैया (जैतपुरवाली रानी) के यहाँ चले गये। वहाँ से बगौरा आकर रज्जबअली ज़मींदार के कारिन्दा बने और अंत समय तक वहीं रहे। उनके यहाँ वे तहसील वसूली का काम करते थे। वेतन ५) महीना और खाना कपड़ा। इन रज्जबअली की विधवा पत्नी आज़ादी बेगम के दर्शन हमने

थोड़े दिनों पूर्व नौगाँव में किये थे। वे बहुत वृद्ध थीं। बोलने में उनको कष्ट होता था। और कानों से नहीं सुन पाती थीं। इसलिए दुर्भाग्यवश ईसुरी के विषय में हम उनसे कोई जानकारी प्राप्त नहीं कर सके। फिर भी उन्होंने हमसे स्नेहपूर्वक बात की। इन आबादी बेगम की नौकरी की ओर लक्ष्य करके ही एक बार धवार से बुलौवा आने पर ईसुरी ने निम्नलिखित पंक्तियाँ वहाँ लिख भेजीं—

जौलों रहे पगन सें नीक,
आय गये सबही कें।
भये इकठौर रंज के मारें,
जा नइँ सकत किसी कें।
आना आठ गाँव में हिस्सा,
मजा मिलकियत जीकें।
बने बगौरा रात ईसुरी,
कारिन्दा बीबी कें।

कहते हैं कि तत्कालीन छतरपुर नरेश उनको अपने यहाँ बुलाते रहे और १) रोज़ वेतन तथा खाना-कपड़ा और एक पंडा और ढीमर की सुविधा देने को तैयार थे। परन्तु बगौरा छोड़कर उन्होंने कहीं भी जाना स्वीकार नहीं किया। यह स्थान उनको इतना प्रिय हो गया था कि एक गीत में वे अपने मित्रों से प्रार्थना करते हैं कि उनकी मृत्यु यदि गंगाजी के पुनीत तट पर भी हो तौ भी उनका दाह-संस्कार बगौरा में ही पूरा किया जाये :—

यारो इतनो जस कर लीजो,
चिता अंत ना दीजो।

* * *

गंगा जू लों मरें ईसुरी,
दाग बगौरा दीजो।

उनके इस सुप्रसिद्ध गीत की अंतिम पंक्तियों के आधार पर ही सम्भवतः सर्वसाधारण में अब भी यह भ्रम फैला हुआ है कि ईसुरी बगौरा के मूल निवासी थे। हमने भी उनको बहुत दिन हुए तब, अपने एक लेख में 'बुन्देल वैभव' नामक पुस्तक को प्रमाण मानकर छतरपुर के निकट बगौरा नामक ग्राम में उत्पन्न हुआ बता दिया। परन्तु बाद में हमें मालूम हुआ कि वह हमारी भूल थी। बगौरा न तो छतरपुर के निकट ही है और न ईसुरी का जन्म-स्थान ही।

ईसुरी के पिता का शुभनाम हमें मालूम नहीं हो सका। उनके मामा का नाम जानकी था। जानकी के पुत्र भूधर हुए। भूधर के पुत्र श्रीबैजनाथजी नायक मौजूद हैं। अवस्था लगभग पैंतालीस के होगी। उन्होंने हमें बताया कि ईसुरी की उन्हें ख़ूब ख़बर है। उनकी मृत्यु के समय वे दस ग्यारह वर्ष के होंगे। कहने लगे कि जब कभी यहाँ आते तो उघारे बदन, कंधे पर अँगौछी डाले, यहीं घर के सामने बैठे रहते थे। सदैव अपनी किसी धुन में रहते जान पड़ते थे. और कुछ न कुछ गुनगुनाया करते थे।

ईसुरी देखने में मझोले क़द के बताये जाते हैं। रंग

गोरा। दुबले से। पहिनाव, कलियोंदार कुर्त्ता और सफ़ेद स्वाफ़ा। जूता बुन्देलखण्डी पहिनते थे। फाग कहने का ऐसा अभ्यास था कि बात बात में फाग बनाकर कहते थे। यहाँ तक कि अदालत में जाने पर फागों में ब्यान देते थे। इससे हाकिम उनसे बड़े प्रसन्न रहते थे। एक बार अपने ममयावरे भाई की लड़की की लगुन लेकर गये। वहाँ कविता में ही आपने बरात का निमंत्रण दिया।

ईसुरी के एक शिष्य थे धीरे पंडा। वे उनके घनिष्ठ मित्र भी थे। वह धौर्रा के निवासी थे। फागें गाने में बड़े प्रवीण। ईसुरी की सब फागें वही गाया करते थे। उनकी गायन-चातुरी की प्रशंसा करते हुए स्वयं ईसुरी एक स्थल पर कहते हैं :—

जिनके चलें अँगारूँ साका,
बड़ी मोहनी भाका।
बाँके बोल लगत औरन खाँ,
गोली कैसो ठाँका।
बैठे रओ सुनो सब बेसुध,
खेंचें रओ सनाका।
दूनर होत नाचने वाली,
मइँ खा जात छमाका।
फागन खाँ इक धीरे पंडा,
ईसुर आयँ पताका।

फागों के किसी भी गायक के लिए इससे अधिक प्रशंसा के शब्द और क्या हो सकते हैं ?

ईसुरी और धीरे के बीच कविता में मनोरंजक पत्र-व्यवहार हुआ करता था। ईसुरी ने एक बार उनको लिखा :—

द्विज धीरे खाँ ईसुरी,
पौंचाई परनाम।
दिल जानें दिल सौंप दओ,
दिल की जानें राम।

गीत

दिल की राम हमारी जानें,
मिंत झूठ ना मानें।
हम तुम लाल बतात जातते,
आज रात बरानें।
सा परतीत आज भई बातें,
सपनन काय दिखाने।
ना हो, माँ हो देख लियत ते,
फूले नईं समाने।
भौत दिनन में मोरो ईसुर,
तुमें लगो दिल चानें।

धीरे ने इसका जो जवाब भेजा वह भी सुन लीजिए; दो मित्रों के बीच हार्दिक स्नेह का कम परिचायक नहीं:—

जिदना हम खाँ आप बुलावें,
हुकुम के पाउत आवें।

घोड़ा गाँव घिसल्ली भेजो,
बिध गत कहा बतावें।
उदना की लाचारी मोंकों,
हती तिजारी दावें।
पड़ुवा सें धीरे पंडा खाँ,
रँगरेजिन बुलवावें।
नइ नइ फाग बना कें ईसुर,
दरवाजे हो गावें।

प्रसंगवश यहाँ रँगरेजिन का परिचय दे दिया जाये जो कि पड़ुवा से धीरे पंडा को फागें गाने के लिए बुलाती है। यह एक नर्त्तकी थी। उसके असली नाम का पता नहीं। वह रँगरेजिन के नाम से ही प्रसिद्ध थी। रूपवती, और नाचने में भी कुशल। जहाँ जाती वहाँ ईसुरी की फागें गाती थी। ऐसा जान पड़ता है, ईसुरी उसके प्रति कुछ आकृष्ट थे। उसकी चंचल, काली आँखों को एक जगह भँवर की उपमा देकर वे कहते हैं:—

नैना भँवर भये बारी के,
रँगरेजिन प्यारी के।
एक से दोऊ वेषधारी हैं,
रुचिर रेख कारी के।
सालिगराम बीच कमलन के,
चितवन अन्यारी के।

लेत सुगंध फूल भये फूले,
मानस संसारी के।
ईसुर परे इसक के फंदे।
आसिक हैं यारी के।

ईसुरी की जन्म-तिथि का हमें अभी तक ठीक पता नहीं चला। परन्तु उनकी मृत्यु पर उनके शिष्य धीरे पण्डा ने निम्नलिखित फाग कही, जो कि बहुत प्रसिद्ध है और जिसमें सौभाग्यवश ईसुरी की मृत्यु का सम्वत् और समय सदैव के लिए सुरक्षित हो गया हैः—

ईसुर तजकें गये शरीरा,
हती न एकउ पीरा।
होतन भोर प्यास लग आई,
पिये गरम कर नीरा।
अगहन सुदी सातें ती उदना,
वार सनीचर सीरा।
संवत् उन्निससौ छयासठ में,
उड़ गओ मुलक भमीरा।

इससे यह स्पष्ट है कि ईसुरी की मृत्यु संवत् १६६६ की अगहन सुदि सातें, शनिवार को हुई। उस समय उनकी अवस्था ७०-७२ के लगभग बताई जाती है। अतः हम कह सकते हैं कि उनका जन्म सं० १८६४ के आसपास हुआ होगा। बगौरा में जब वे अधिक बीमार हुए तो उनकी लड़की उनको धवार ले गई। वहीं उनका देहान्त हुआ।

एक चबूतरे के रूप में वहाँ उनका स्मारक बना है और बगौरा में वह घर भी आबाद है जिसमें कि ईसुरी बहुत दिनों रहे। ईसुरी की फागों से जिन सज्जनों को थोड़ा भी प्रेम है, उनको एक बार इन दोनों स्थानों की तीर्थयात्रा अवश्य करनी चाहिए।

ईसुरी विशेष पढ़े-लिखे नहीं थे। पर सरस्वती की उन पर विशेष कृपा थी। वे जन्म-सिद्ध कवि थे। देहातों में होली के अवसर पर एक प्रकार के गीत गाये जाते हैं। वे फाग कहलाते हैं। ईसुरी की सहज काव्य-प्रतिभा इन फागों के रूप में ही प्रस्फुटित हुई है। शिष्ट-समाज में होली के इन गीतों का कोई चलन नहीं है। वे एक विशेष प्रकार के प्राथमिक सुर और ताल के रूप में प्राकृत मानव के मन का उच्छ्वास मात्र हैं। पर ईसुरी को यह श्रेय प्राप्त है कि उसने अपनी अद्भुत और स्वाभाविक कवित्वशक्ति के बल से इन उपेक्षित और अनादृत गीतों को साहित्य और संगीत का एक अनुपम रूप प्रदान किया है। यह उसकी सबसे बड़ी विशेषता है। हमारे कुछ मित्र उसको 'महाकवि' कहते हैं और कुछ ऐसे भी हैं जो उसकी रजऊ नाम की काल्पनिक नायिका में आद्याशक्ति नारी का परम उदात्त रूप देखने के प्रयासी हैं। परन्तु इस तरह की चेष्टा हास्यास्पद है। ईसुरी कवि था। एक ऐसा कवि, शिक्षा और अनुभव के द्वारा जिसका पूर्ण विकास नहीं हो सका, तो झूठे पाण्डित्य ने जिसकी कविता को कृत्रिम नहीं बनाया।

यहाँ उसके सम्बन्ध में इतना ही कहना बहुत होगा। शब्दों का अपव्यय ठीक नहीं। ईसुरी के प्रकृत महत्व को अभी हम नहीं समझेंगे। परन्तु आगे चलकर जब लोक-साहित्य के अध्ययन के विषय में पाठकों का सही दृष्टिकोण विकसित होगा और प्रतिभा के मूलतत्त्व को वैज्ञानिक ढंग से समझने की चेष्टा होगी तब हम देखेंगे कि ईसुरी हमारे प्रान्त का एक विलक्षण प्रतिभा-सम्पन्न व्यक्ति था। गत सौ वर्ष के भीतर हमारे यहाँ वैसा कोई पुरुष उत्पन्न नहीं हुआ। हाँ, स्वर्गीय मुंशी अजमेरी उसी कोटि के थे, जिनको हमने अभी तक नहीं पहिचाना।

हमारे पास ईसुरी की एक हज़ार से अधिक फागें इकट्ठी हो चुकी हैं। उनको हम क्रमशः कई भागों में प्रकाशित कर रहे हैं। यहाँ प्रथम भाग पाठकों की भेंट है। फागों को हमने एक क्रम से सजाकर रखने की चेष्टा की है, जिसमें कहीं रस-भंग न हो, और उनकी पाठ-शुद्धि का भी हमने पूरा ध्यान रक्खा है। एक एक फाग को हमने अनेक फगवारों से पूछकर और उनकी शुद्धता की पूरी जाँच करके यहाँ प्रकाशित किया है। इस कार्य में हमें बगौरा के श्रीबल्देव अहीर, मैंड़की के गयाप्रसादजी पाठक तथा कौनिया के स्व० भूधर तिवारी से बड़ी सहायता मिली है जिसके लिए हम उनके कृतज्ञ हैं। साथ ही पनवाड़ी (हमीरपुर) के श्रीबारेलालजी उस्ताँ, हरपालपुर के श्री ग्यासीलालजी गुप्त, राठ के श्री श्यामसुन्दरजी बादल और रामपुरा

(गरौठा) के श्रीरघुवर तिवारी के प्रति भी हम अपना विशेष आभार प्रकाशित करते हैं, जिनसे हमें ईसुरी की फागों के संग्रह करने एवं उनके जीवन-वृत्त की खोज में समय समय पर विशेष सहयोग मिलता रहा है ।

बुदेन्लखण्ड में ईसुरी की ये फागें चौकड़िया के नाम से प्रसिद्ध हैं, क्योंकि उनमें प्रायः चार कड़ियाँ होती हैं। कहीं-कहीं पाँच भी देखने में आती हैं । परन्तु बहुत कम । ईसुरी ने ही सबसे पहले इस प्रकार की फागों को जन्म दिया । वे सब 'नरेन्द्र' छंद में बँधी हैं, जो भारतीय संगीत की रीढ़ है। यह छंद २८ मात्राओं का होता है । १६ और १२ के बीच यति होती है । अंत में गुरु । फागों में केवल इतनी विशेषता है कि प्रथम पंक्ति में १६ मात्राओं के पहले चरण के साथ १२ मात्राओं के दूसरे चरण का अनुप्रास मिला दिया गया है। शेष पंक्तियाँ साधारण नरेन्द्र छंद की भाँति चलती हैं । हमने पाठ की सुविधा की दृष्टि से कहीं-कहीं जान-बूझकर लघु स्वर को दीर्घ लिख दिया है । उसे पाठक छन्दोभंग-दोष न समझें । वे कृपया इस बात का ध्यान रक्खें कि ये गीत गाने के लिए बने हैं, साधारण कविता की तरह पढ़ने के लिए नहीं । गाकर पढ़ते समय स्वर के उतार चढ़ाव के अनुसार दीर्घ का लघु और लघु का दीर्घ अपने आप मुख से प्रकट होता है ।

हिन्दी पत्र-पत्रिकाओं में बहुधा ईसुरी पर लेख प्रका-

शित होते रहते हैं। दुःख की बात है कि वहाँ फागों की पाठ-शुद्धि की ओर लेखकों का ध्यान नहीं जाता। अब तक हमें जितनी भी छपी फागें पढ़ने को मिली हैं उनका पाठ नितान्त अशुद्ध और लेखकों के अनाड़ीपन का परिचायक है। अतः ईसुरी के प्रेमियों से हमारी प्रार्थना है कि फागों को छपाने के पहले थोड़ा परिश्रम करके उनके शुद्ध रूप को स्थिर कर लिया करें।

श्रीमान् ओरछेश को ईसुरी बहुत प्रिय है। ईसुरी का पूरा परिचय हमें उनके निज के संग्रह से ही मिला। हमारे पास जो १००० फागें हैं उनमें ७०० के लगभग उनके संग्रह की हैं। वे ईसुरी की प्रशंसा करते नहीं थकते। इसलिए नहीं कि उसमें भाषा की अनुपम सादगी और लावण्य है, बल्कि इसलिए कि वह बुन्देलखण्ड की जनता का अपना कवि है। उसके द्वारा बुन्देलखण्डी का कंठ मुखरित हुआ है। उसको काव्य की मधुर वाणी मिली है। उसके विषय में सर्व साधारण में एक दोहा प्रचलित है—

रामायण तुलसी कही,
तानसेन ज्यों राग।
सोई या कलिकाल में,
कही ईसुरी फाग॥

पाठक इतने से ही अनुमान लगा लें कि बुन्देलखण्ड की ग्रामीण जनता के हृदय में ईसुरी का क्या स्थान है। जिसने यह दोहा कहा, ईसुरी को बड़ा बताकर तुलसी की अवमानना

करना उसका उद्देश्य नहीं था और न तानसेन के राग को ही उसने किसी प्रकार अवज्ञा की दृष्टि से देखा है। उसने तो केवल अपने कवि के प्रति, जिसे उसने अपने हृदय के अधिक निकट पाया, अपनी श्रद्धाञ्जलि अर्पित की है।

यह ओरछेश की सतत प्रेरणा का परिणाम है कि ईसुरी की ये फागें—जिनके प्रकाशित होने की प्रतीक्षा एक दीर्घ काल से की जा रही थी—इस सुन्दर रूप में पाठकों को पढ़ने के लिए मिल रही हैं। अतः बुन्देलखंड के सभी साहित्य-प्रेमियों के निकट निस्संदेह वे हार्दिक प्रशंसा और धन्यवाद के पात्र हैं।

आशा है हिन्दी पाठक ईसुरी को अपनायेंगे।

रैस्ट हाउस, टीकमगढ़
सी० आई०
चैत्र शुक्ला, १४ सं० २००३

कृष्णानन्द गुप्त

ईसुरी
की
फागों की प्रशंसा में

फागें सुन आयें सुख होई,
दे़इ दे़वता मोई।
इ़न फागन पै फाग न आवे,
कइ़ इक करौ अनोई।
भौंर भखन कौ उगलन रै गओ,
कली कली कैं गोई।
बस भर ईसुर एक बची ना,
रस सब लओ निचोई।

—कोई एक ग्रामकवि

ईसुरी की फागें

*

जग में होय उजेरो जीकौ,
राधा कौ मुख नीकौ।
उते हिरात परब हीरन की,
कुंदन कौ रँग फीकौ।
जौ रँग रूप पाइये काँ सें,
बिरन करेजो भींकौ।
ईसुर सदा स्वाद बानी लयँ,
सुक्ख सनेह अमी कौ।

मुय बल रात राधिका जी को,
करें आसरो कीकौ।
दीनदयालु दीन दुख देखत,
जिनको मुख है नीकौ।
पैले पार पातकी कर दै,
मोहन सौ पति जीकौ।
ईसुर कछू काम खाँ जानें,
कदमन के ढिग भींकौ।

❀ ❀ ❀

कानन डुलें राधिकाजी के,
लगें तरकुला नीके।
आनँदकंद चंद के ऊपर,
दो तारागण भींके।
परतन पसर परत गालन पै,
तरें भूमका जीके।
जिनके घर सें जौ पैराव,
और जनन नें सीके।
श्याम सनेह ईसुरी देखत,
ब्रजवासी बस्ती के।

देखत श्याम माँग में मोये,
गोला मुख पै गोये।
बीचन बीच फूल बेला के,
फन्दन फन्द बिदोये।
मानों सिन्धु सीप के मोती,
श्याम पाट में पोये।
तीन धार तिरबेनी तामें,
तन के पातक धोये।
ईसुर कहत प्राग की परबी,
मन लै चलबी तोये।

ꕥ ꕥ ꕥ

धरती धरें लटी लमछारी,
मनों नागनें कारी।
गुबवा रईं छोर कैं जूरौ,
करया ऊपर डारीं।
रुच सें गोये चुटीला चुटिया,
रुच रुच पटियाँ पारीं।
ईसुर लखी लगा कें ऐना,
श्री वृषभानु दुलारी।

कैसे डरे केश अनगोये,
आज लाड़ली धोये।
बूँदा चुअत नितम्बन ऊपर,
कम से गये निचोये।
रुरके केश भुजन पै आये,
कारे नाग से सोये।
ईसुर देखी छब छाजे पै,
भानु चन्द्रमा मोये।

❀ ❀ ❀

भौतक हलकी सी ननदुलिया,
लागी देन बिंदुलिया।
ऐसी निगन निगत लरकन में,
डारें हात हतुलिया।
छूटी नहीं लरम मुँइयाँ सें,
जा तोतली बतुलिया।
ईसुर फिरत पान सौ खायें,
मिस्सी लगी दँतुलिया।

नैनन सामलिया लग जैहे,
जो तैं जमुनें जैहे।
जिनको राज जिनइ की रैयत,
उनकी कीसों कैहे।
चाहत है जो अपने कुल की,
बाहर पाँव न दैहे।
ईसुर स्याम मिलै कुंजन में,
मन आई कर लैहे।

❀ ❀ ❀

रैयो मनमोहन सों बरकी,
तुम नइ भईं अहिर की।
होत भोर जमने ना जैयो,
दैकें कोर कजर की।
उनकौ राज उनइँ की रैयत,
सिर पर बात जबर की।
ईसुर कात तला में बसकें,
सैये सान मगर की।

गोरी तोरे नैन उरजैला,
छले छबीले छैला।
गैलारन पै चोट करत हैं,
बाँदें रात चुगैला।
हँस मुस्कान दावनी सी दयें,
करौ गाँव दबकैला।
इनसें जस ना हुये ईसुरी,
अपजस आँगँ फैला।

❀ ❀ ❀

करजै कोउ टोटका टौना,
ई लड़ुआ से मौं ना।
कड़वू करे नजर बरका कैं,
दैकें डीठ डिठौना।
घर अरु बार पुरा पाले में,
तुम हौ हाल खिलौना।
जैसी रूप आगरी तुम हौ,
ऐसी मुसकिल होना।
ईसुर इने खुशी विध राखैं,
जुग जुग जिये निरौना।

देखौ रजउ खाँ पटियाँ पारैं,
सिर सबयार उघारैं।
मोतिन माँग भरी सेंदुर सें,
बेंदा देत बहारैं।
ठाँड़ी हतीं टिकीं चौखट सें,
सहजइ अपने द्वारैं।
काम समर में सिर कटवे खाँ,
खोंसें दो तरवारैं।

❀ ❀ ❀

पटियाँ कौन सुगर नें पारीं,
लगी देखतन प्यारीं।
रंचक घटी बड़ी हैं नैयाँ,
साँसे कैसी ढारीं।
तन रइँ आन सीस के ऊपर,
श्याम घटा सी कारीं।
ईसुर प्रान खान जे पटियाँ,
जब सें तकीं उघारीं।

ऐसे अलबेली के नैना,
मुख सें कात बनै ना।
सामें परै सोउ छिद जैहे,
जिन्दा जियत बचै ना।
लागत चोट निसाने ऊपर,
पंछी उड़त बचै ना।
पर जियरा के लेत ईसुरी,
जे निर्दइ कसकें ना।

❀ ❀ ❀

छूटे नैन बान इन खोरन,
तिरछीं भोंह मरोरन।
ई गलियन जिन जाओ मुसाफिर,
गजब परौ इन खोरन।
नोंकदार बरछी से पैने,
चलत करेजे फोरन।
ईसुर हमने तुमसे कै दई,
घायल डरे करोरन।

ऑखियाँ पिस्तौलें सी भरकें,
मारन चात समरकें।
गोली लाज दरद की दारू,
गज कर देत नजर कें।
देत लगाय सेंन कौ सूजन,
पल की टोपी धरकें।
ईसुर फैर होत फुर्ती में,
कोऊ कहाँ लौं बरके।

❀ ❀ ❀

दोई नैनन की तरवारें,
प्यारी फिरें उबारें।
अलेमान गुजरात सिरोही,
सुलेमान झक मारें।
ऐंच बाड़ म्यान घूँघट की,
दै काजर की धारें।
ईसुर श्याम बरकते रहियो,
ऑंधियारें उजियारें।

जुबना कड़ आये कर गलियाँ,
बेला कैसी कलियाँ।
ना हम देखे जमत जमीं में,
ना माली की बगियाँ।
सोने कैसे तबक चढ़े हैं,
बरछी कैसी भलियाँ।
ईसुर हाथ सँभारे धरियो,
फूट न जावें गदियाँ।

❀ ❀ ❀

चूनर चारु चपेटन वारी,
पैरें यार हमारी।
कउँ पिस्तई प्याजी जंगाली,
अगरई कउँ अनारी।
पीरी कउँ हरीरी नुकरई,
कुसमानी कउँ कारी।
कउँ सुस्तइ कउँ सरदइ सुन्दर,
सुर्खी कउँ सुनारी।
काँ लों लेवें नाम ईसुरी,
सबरे रँगन सँवारी।

जीमें लिखे पपीरा मोरें,
ऐसी अँगियाँ तोरें।
मुकते लाल मुनैयाँ लिपटे,
चिरवा चारु चकोरें।
पीरी हरी चिरैयाँ चिपकी,
सुआ मुरक मुख मोरें।
बूँटा भरे मुजन पै भारी,
बेलन बाँदी कोरें।
कायल करन कुयलियाँ ईसुर,
दो छाती के दोरें।

❀ ❀ ❀

जिदना रजउ ने पैरो गानो,
हरतीं जिया बिरानों।
छूटा चार बिचौली पैरें,
भरें फिरें गरदानौ।
जुबनन ऊपर चोली पैरें,
लटके हार दिवानो।
ईसुर कात बरकने नैयाँ,
देख लेव चह ज्वानो॥

नग नग कैसौ बनो बँद्वारौ
रजउ कौ डोल दुआरौ।
अँड़ियाँ जबर मँसीली जाँघें,
कबजन कोद निहारौ।
ओलें तिहरीं परें पेट में,
माफिक कौ थुँदवारौ।
गोरो बदन स्यामली साड़ी,
लगे लिपटतन प्यारौ।
ईसुर नचत माँय सें आ गईं,
गज घूमत मतवारौ।

❀ ❀ ❀

नौनें नईं नजर के मारें,
रातीं रजऊ हमारें।
रोजउ रोज झरैया गुनिया,
दस दस बेराँ झारें।
मंत्र पढ़ा कें लट बँधवाई,
जंत्र गरे में डारें।
उदना बिधना अलफ बचावे,
जिदना पटियाँ पारें।
रजऊ ऊपर रोजउँ ईसुर,
राई नोंन उतारें।

मानस बड़े भाग सें होवै,
रजउ छोड़ दो लोभै।
मिलकें चाल चलौ दुनियाँ में,
सब सें राख घरोवै।
जिंदगानी कौ कौन भरोसो,
जुवन जात रयँ रोबै।
भरे तला में सपरत ईसुर,
नंगे कहा निचौवै।

❀ ❀ ❀

मानुस होने कै ना होनें,
रजउ बोल लो नोनें।
जियत जियत लों सबसें नाते,
मरें घरी भर रोनें।
कितनी बेर प्रान छोड़ दये,
कीके संगे कौने।
ईसुर हाथ लगै ना हँड़िया,
आवै सीत टटौंने।

भर लओ कितनी बेराँ पानी,
रजउ न आज दिखानी।
कै हम बैठे पीठ करेंते,
कै तुम कड़ीं चिमानी।
कै हम गये ते बाग बगीचा,
कै बिरिया नइँ जानी।
ईसुर मन तक गये कुआँ लौं,
लयें लवन की खानी।

❀ ❀ ❀

मिलतीं कबहुँ अकेली नैयाँ,
बतकाओ खाँ गुइयाँ।
मिल जाते मन की कै लेते,
जैसी हते कवैयाँ।
बाहर सें भीतर खाँ कड़ गईं,
कुल्ल लुगाइन मैयाँ।
ईसुर कात तुमारे लानें,
ढत कुआँ तलैयाँ।

नीकौ नईं रजउ मन लगवो,
एई सें करत हुटकवो।
मन लागें लग जात जनम खाँ,
रोमन रोम कसकवो।
सुनतीं तुम्हैं सओ न जैहे,
सब सब रातन जगवो।
कछू दिनन में होत कछू मन,
लगन लगत लौ भगवो।
ईसुर जे आसान नहीं है,
प्रान पराये हरवो।

❀ ❀ ❀

हींसा परे आगले मेरे,
रजउ नैन दुउ तेरे।
जाँ हम होवें मईं खाँ हेरो,
अंत जायें ना फेरे।
जब देखो हम खाँ देखो,
दिन में साँज सवेरे।
ईसुर चित्त चलन ना पावे,
कबहुँ दाहिने डेरे।

जौ जी रजउ रजउ के लानें
का काऊ सें कानें।
जौलों रहने जियत जिंदगी,
रजउ के हेत कमानें।
पैलाँ भोजन करैं रजौआ,
पाछूँ कें मोय खाने।
रजउ रजउ कौ नाम ईसुरी,
लेत लेत मर जानें।

❀ ❀ ❀

बिधना करी देह ना मेरी,
रजउ के घर की देरी।
जाते लगत चरन कमलन तें,
गयँ आयें हर बेरीं।
परती सीस धूल धरती की,
कुगति सुधरती मेरी।
ईसुर आन कान के ऐंगर,
बजन लगी बजनेरी।

देखीं रजउ काउनें नैयाँ,
कौन बरन तन मैंयाँ।
काँ तौ उनकी रहस-रास है,
काँ दये जनम गुसैंयाँ।
पैलउँ भेंट हमइँ सें ना भइ,
सही कृपा हम पैयाँ।
ईसुर हमने रजउ की फागें,
कर दईं मुलकन मैंयाँ।

❀ ❀ ❀

दोउ कर परमेसुर सें जोरें
करो कृपा की कोरें।
ठठरी पै धरकें लै जैयो,
रजउ कोद की खोरें।
हमना हुयें दिखैया देखें,
लगी प्रेम रस डोरें।
बना चौंतरा दियो चतुरभुज,
इतनी खातिर मोरें।
मन चाहै जौ मरें ईसुरी,
किलेदार के दोरें।

नैयाँ रजउ काउ के घर में,
बिरथा कोऊ भरमें।
सब में है उर सबसें न्यारी,
सब ठौरन में मरमें।
को कय अलख खलक की बातें,
लखी न जाय नजर में।
ईसुर गिरधर रयँ राधे में,
राधा रयँ गिरधर में,

हम खाँ बिसरत नहीं बिसारी,
हेरन हँसन तुम्हारी।
जुबन विशाल चाल मतवारी,
पतरी कमर इकारी।
भौंह कमान बान से तानें,
नजर तिरीछी मारी।
ईसुर कात हमारी कोदीं,
तनक हेर लो प्यारी।

कड़्यो आँसत गैल गली कौ,
सुगर नार पतरी कौ।
पग के धरतन परत छमाके,
छूटत ज्ञान जती कौ।
छकी फिरत मदरस की मारी,
ज्यों हाथी मस्ती कौ।
ईसुर भुमत फिरत भौंरा भै,
रस लैबे कौं ई कौ।

❁ ❁ ❁

चलतन परत पैजना छनके,
पाँवन गोरी धन के।
सुनतन रोम रोम उठ आवत,
धीरज रहत न तन के।
छूटे फिरत गैल खोरन में,
सुर मुख्तार मदन के।
करवे जोग भोग कछु नाते,
लुट गये बालापन के।
ईसुर कौन कसाइन डारे,
जे ककरा कसकन के।

नैयाँ रजउ काउ के घर में,
बिरथा कोऊ भरमें।
सब में है उर सबसें न्यारी,
सब ठौरन में मरमें।
को कय अलख खलक की बातें,
लखी न जाय नजर में।
ईसुर गिरधर रयँ राधे में,
राधा रयँ गिरधर में,

❀ ❀ ❀

हम खाँ बिसरत नहीं बिसारी,
हेरन हँसन तुम्हारी।
जुवन विशाल चाल मतवारी,
पतरी कमर इकारी।
भौंह कमान बान से तानें,
नजर तिरीछी मारी।
ईसुर कात हमारी कोदीं,
तनक हेर लो प्यारी।

कड़बो आँसत गैल गली कौ,
सुगर नार पतरी कौ।
पग के धरतन परत छमाके,
छूटत ज्ञान जती कौ।
छकी फिरत मद्रस की मारी,
ज्यों हाथी मस्ती कौ।
ईसुर भुमत फिरत भौंरा भै,
रस लैबे कौं ई कौ।

❀ ❀ ❀

चलतन परत पैंजना छनके,
पाँवन गोरी धन के।
सुनतन रोम रोम उठ आवत,
धीरज रहत न तन के।
छूटे फिरत गैल खोरन में,
सुर मुख्तार मदन के।
करवे जोग भोग कछु नाते,
लुट गये बालापन के।
ईसुर कौन कसाइन डारे,
जे ककरा कसकन के।

जुबना दये राम ने तोरें,
सब कोउ आवत दोरें।
आहें नहीं खाँड़ के घुल्ला,
पियें लेत ना घोरें।
का भओ जात हाथ के फेरें,
लेत नहीं कुउ टोरें।
पंछी पियें घटी ना जाती,
ईसुर समुद हिलोरें।

❀ ❀ ❀

चूमा माँग लेत गैलारो,
मों हम खाँ ना टारो।
आदर भाव जेइ सब जानें,
मन रै जात हमारो।
चार जनें के बीच बैठ कें,
का जस गायँ तुमारो।
ईसुर माँगन आये दोरें,
दरस दच्छना डारो॥

हम पै चुमवा लो जा मुइयाँ,
फिर पछतैहो गुइयाँ।
प्यारे लगे कपोल गोल दो,
परै हँसत में कुइयाँ।
चार दिना की यह फुलवारी,
होन चात उजरइयाँ।
ईसुर कहुँ बैठी नहिं देखी,
सूखे आम पै टुइयाँ।

❀ ❀ ❀

निकसे जात मायके मैयाँ,
ज्वानी के दिन गुइयाँ।
छाती अबे मसकबे लायक,
चूमा लायक मुइयाँ।
जैहे लौट वैस फिर आहैं,
बिदा करावन सैंयाँ।
ईसुर रात साथ पत छूटो,
कौने पाप गुसैयाँ।

का सुख भओ सासरे मैंयाँ,
हमें गये को गुइयाँ।
परबो करे दूध पीबे खाँ,
सास के संगें सैयाँ।
दिन भर बनी रात संकीरन,
चढ़े ससुर की कैयाँ।
भर भर देवौ करें दूर सें,
देखत हमें तरैयाँ।
कटी बज्र की रात ईसुरी,
लटी होत लरकैयाँ।

❀ ❀ ❀

वे दिन गौनें के कब आवें,
जब हम ससुरे जावें।
बारे बलम लिवौआ होकें,
डोला संग सजावें।
गा गा गुइयाँ गाँठ जोर कें,
दोरे लों पहुँचावें।
हाते लगा सास ननदी के,
चरनन सीस नवावें।
ईसुर कवै फलाने जू की,
दुलहिन टेर कहावें।

कैयो गौन जोग भइ छाती,
लिखो बलम खाँ पाती।
हम खाँ देख हमारे दोरें,
उतरन लगे बिसाँती।
बेंचन लगे कनक कजरौटी,
टिकली सीस सुहाती।
मन राजा ने छोड़ो ईसुर,
तन मुद्दई कौ हाती।

❀ ❀ ❀

मोरो अब गोनों नियरानों,
करबी कौन बहानों।
आवन लगे पिया के घर के,
टिया टारिये कानों।
छूटो जात साथ सब ही को,
मन मतंग पछतानों।
इक दिन होने बिदा ईसुरी,
आगम आन दिखानों।

आ गये बलम बिदा के लानें,
चार जनें के जानें।
अब कौ टिया टार दै जो कुउ,
जनम जनम जस मानें।
भीतर सें पग फटत न कैसउँ,
करिये कौन बहाने॥
छै महिना कौ टिया धरत हैं,
दो दिन की ना मानें।
ईसुर कात बैठ डोला में,
देश बिरानें जानें।

❀ ❀ ❀

अब दिन गौनें के लग आये,
हमने कइती काये।
पैली साले ब्याव भओ तो,
दुसरी साल चलाये।
तिसरी साल बिदा की बातें,
नाउ सँदेसे लाये।
कात ईसुरी सुन लो प्यारी,
तनक बैठ ना पाये।

धन वा घरी बिदा के दिन की,
होत पिया सँग तिनकी।
भीतर बखरी जुरे पावने,
भीर मची लोगन की।
वो दिन नीक अगन में जुरहे,
कुसल मना छिन छिन की।
ईसुर बिदा सबई की इक दिन,
ठाँड़ी गैल में ठिनकी।

❀ ❀ ❀

इक दिन हुए सबइ कौ गोनो,
होनो उर अनहोनो।
जाने परै सासुरे सब खाँ,
बुरौ लगे चय नोनों।
आँयें लुवौआ बे ना मानें,
चाय बता दो सोनों।
ईसुर बिदा हुए जा जिदना,
पिय के संग चलौनो।

जौ तन बाग बलम कौ नीकौ,
सिंचौ सुहाग अमी कौ।
श्रीफल फरे धरे चोली में,
मद-रस चुअत लली कौ।
लेत पराग अधर पै मधुकर,
विकसी कमल कली कौ।
ईसुर कहत बचायें रहियो,
छुये न छैल गली कौ।

❀ ❀ ❀

राते परदेसी सँग सोई,
छोड़ गओ निर्मोई।
अँसुआ ढँड़क परे गालन पै,
जुवन भींज गय दोई।
गोरे तन की चोली भींजी,
दो दो बार निचोई।
ईसुर परी सेज के ऊपर,
हिलक हिलक में रोई।

बाँके नैन कजरवा आँजो,
बलम बिना ना साजौ।
दुलहिन घरे दिखैया को है,
बौ परदेस बिराजौ।
आहौ बड़ी बड़न कैं ब्याईं,
अपने कुल खाँ लाजौ।
करतीं कौन काम का कहिये,
कजरौटी ना माँजौ।
साजो नहीं लगत है ईसुर,
बे औसर कौ बाजौ।

❀ ❀ ❀

अब न जाओ मुसाफिर आँगें,
जात बिदा दिन माँगें।
मिलने नहीं गाँव कोसिन लौं,
परतीं इकदम डाँगें।
है अँधियारी रात गैल में,
चोर चबाई लागें।
परों सुनत दो जने लूट लये
मार मार कैं साँगें।
ईसुर कात रओ, उठ जैयो,
अरुणसिखा जब जागें।

पानें नये यार के लानें,
हर हर बेरें जानें।
भरौ भराओ लुड़का दैयत,
चाय होय ना चानें।
द्वारें बैठो देख आइयत,
कर कर जेइ बहानें।
नायें सें हेरत हम हँस जैयत,
मायँ सें वे मुस्कानें।
बिन देखें ना चलै ईसुरी,
चल जै बिना बताने।

❀ ❀ ❀

ऐसी पैंजनियाँ ना ठनके,
घर के ऐंगर बनकें।
पा न जाये उकास पाँव सें,
दाबें रैयो हनकें।
डारें होव जौन तुम ककरा,
खैंच डारियो दिन कें।
झाँकत रात तुम्हारे घर के,
दौर आयँ बे सुन कें।
कात ईसुरी कान और के,
परन न पावें झनकें।

जो तुम छैल छला हो जाते,
परे उँगरियन राते।
मों पोंछत गालन खाँ लगते,
कजरा देत दिखाते।
घरी घरी घूँघट खोलत में,
नजर के सामें राते।
मैं चाहत ती लख में बिदते,
हाथ जाइँ खाँ लाते।
ईसुर दूर दरस के लानें,
ऐसे काय ललाते।

❀ ❀ ❀

साँकर कर्णफूल की होते,
इन मुतियन की कोते।
बैठत उठत निनग निवरन में,
परे गाल पै सोते।
राते लगे माँग के नैंचें,
अंग अंग सब मोते।
ईसुर इन खाँ देख देख कें,
सबरे जेवर जोते।

अब रितु आई वसंत बहारन,
पान फूल फल डारन ।
बागन बनन बंगलन बेलन,
बीथी बगर बजारन ।
हारन हद्द पहारन पारन,
धवल धाम जल धारन ।
तपसी कुटी कंदरन माँहीं,
गइ बैराग बिगारन ।
ईसुर अंत कंत घर जिनके,
तिने देत दुख दारुन ।

❀ ❀ ❀

हम पै बैरिन बरसा आई,
हमें बचा लेव माई ।
चढ़ कैं अटा घटा ना देखें,
पटा देव अगनाई ।
बारादरी दौरियन में हो,
पवन न जावे पाई ।
जे द्रुम कटा छिटा फुलबगियाँ,
हटा देव हरयाई ।
पिय जस गाय सुनाव न ईसुर,
जो जिय चाव भलाई ।

हिन्दुस्तानी एकेडमी, उ. प्र.
५६०८
पुस्तकालय
इलाहाबाद

[illegible] दिने कटत बैन बज्जुर के,
अबे दुपर ना मुरवे
पूरब सें सूरजनारायन,
पच्छिम खाँ ना उरके।
काटे कटत बटत ना बाँटे,
बिना लगनियें उर के।
अपने अपने घरन मजा में,
लोग लुगाई पुर के।
जान जिवावन आन मिलेंगे,
कबे यार ईसुर के।

❀ ❀ ❀

बे पिय कड़े न कैउ दिनन सें,
प्रान जियत ते जिनसें।
नैना तकें रात गलियारे,
कान लगे एरन सें।
भीतर काम दंद न औरै,
टकी रात कौरन सें।
हैं, कै कौनऊँ गये गाँव पै,
खबर पूँछिए किन सें।
ईसुर कबै नाम सुन लगवी,
उन कोमल कदमन सें।

व रितु आई वसंत बहारन,
पान फूल फल डारन।
ान बनन बंगलन बेलन,
बीथी बगर बजारन।
न हद्द पहारन पारन,
धवल धाम जल धारन।
ी कुटी कंदरन माँहीं,
गइ बैराग बिगारन।
अंत कंत घर जिनके,
तिने देत दुख दारुन।

❀ ❀ ❀

बैरिन बरसा आई,
हमें बचा लेव माई।
अटा घटा ना देखें,
पटा देव अगनाई।
दौरियन में हो,
पवन न जावे पाई।
ा छटा फुलबगियाँ,
हटा देव हरयाई।
य सुनाव न ईसुर,
जो जिय चाव भलाई।

हिन्दुस्तानी एकेडमी, उ॰ प्र॰
५६०८
पुस्तकालय
इलाहाबाद

[illegible] कहत बैन बज्जुर के,
अबे दुपर ना मुरवे
पूरब सें सूरजनारायन,
पच्छिम खाँ ना उरके।
काटे कटत बटत ना बाँटे,
बिना लगनियें उर के।
अपने अपने घरन मजा में,
लोग लुगाई पुर के।
जान जिवावन आन मिलेंगे,
कबे यार ईसुर के।

❀ ❀ ❀

बे पिय कड़े न कैउ दिनन सें,
प्रान जियत ते जिनसें।
नैना तकें रात गलियारे,
कान लगे एरन सें।
भीतर काम दंद न औरै,
टकी रात कौरन सें।
हैं, कै कौनऊँ गये गाँव पै,
खबर पूँछिए किन सें।
ईसुर कबै नाम सुन लगबी,
उन कोमल कदमन सें।

सपनन दि्खा परे मोय सैंयाँ,
सुनो परोसिन गुइयाँ।
आपुन आय उसीसें ठाँड़े,
झपट परी मैं पैयाँ।
उनके दृग दोऊ भर आये,
मोरी भरीं डबैयाँ।
ईसुर आँख दगा में खुल गई,
हतो उतै कोउ नैयाँ।

* * *

अँखियाँ मित्र मिलन खाँ तरसें,
देखें कबै नजर सें।
घर सें बाहर जान न पावें,
सास जेठ के डर सें।
पापी छैल पास ना आये,
भई चार छै बरसें।
ईसुर वे दिन कबै लिवावें,
बे जेवें हम परसें।

देखौ नैयाँ आँखें भरकें,
जब सें गये निकर कें।
आपन ज्वान फारकत हो गये,
मोय फकीरन करकें।
अपने संगे लै गये प्यारे,
प्रान पराये हरकें।
ऐसे मानस मिलने नैयाँ,
मानस कौ तन धरकें।
खपरा भओ सूख तन ईसुर,
खाक करेजो जरकें।

❀ ❀ ❀

अब के गये कबै तुम आओ,
बो दिन हमें बताओ।
होय अधार तनक ई जी खाँ,
ऐसी स्यात धराओ।
जल्दी खबर लियो जो जानो,
इन प्रानन खाँ चाओ।
ईसुर नेंक चलत की बिरयाँ,
कंठ सें कंठ लगाओ।

देखौ नैयाँ भौत दिनन सें,
बुरव लगत है मन सें।
लुवा न आये पुरा पाले के,
कैबो करी सबन सें।
एकन सें बिनती कर हारी,
पालागन एकन सें।
मन में करें उदासी रइ हौं,
भई दूबरी तन सें।
ईसुर बालम तुमैयें जानों,
मैंने बालापन सें।

❀ ❀ ❀

चले गये जरा चितै न पाये,
मोरे लाने आये।
उन बोली कौ दओ इसारो,
सुन भीतर सें धाये।
जबरइ लोग पुरा पाले के,
परत बीच में काये।
चाये मिलत हैं थोरे ईसुर,
भौत मिलत अनचाये।

मोरे मन की हरन मुनैयाँ,
आज दिखानी नैयाँ।
कै कऊँ हुये लाल के संगे,
पकरी पिंजरा मैयाँ।
पत्तन पत्तन ढूँढ़ फिरे हम,
बैठी कौन डरैयाँ।
कहत ईसुरी इनके लानें,
टोरीं सरग तरैंयाँ।

❀ ❀ ❀

छूटो संग चाइयत नाते,
अरे यार दिन राते।
हम वा गैल पैल निग जाते,
जौन गैल तुम जाते।
लगकें ललक हिये अपने की,
हीर पीर की काते।
लेते खवा पैल अपुने खाँ,
जब पीछें हम खाते।
इतनी बिध ना करी ईसुरी,
चाते जाँ मिल जाते।

पंछी भये न पंखन वारे,
इतनी जाँगाँ हारे।
साँसन में हो कड़ कड़ जाते,
चाते नाहीं द्वारे।
सब सब रातन मजा लूटते,
परते नाहीं न्यारे।
ईसुर उड़कें मिलो मित्र सें,
जाँ हुयँ यार हमारे।

❀ ❀ ❀

जो तन हो गओ सूख छुहारौ,
ऊसइँ हतौ इकारौ।
रै गइ खाल हाड़ के ऊपर,
मकरी कैसो जारौ।
तन भौ बाँस, बाँस भौ पिंजरा,
रकत रहौ ना सारौ।
कहत ईसुरी सुन लो प्यारी,
खटका लगो तुम्हारौ।

जब सें भई प्रीत की पीरा,
खुसी नहीं जौ जीरा।
कूरा माटी भओ फिरत है,
इते उते मन हीरा।
कमती आ गई रकत माँस की,
बहौ दृगन सें नीरा।
फूँकत जात बिरह की आगी,
सूखत जात सरीरा।
ओइ नीम में मानत ईसुर,
ओइ नीम कौ कीरा।

❀ ❀ ❀

हड़रा घुन हो गये हमारे,
सोसन रजऊ तुमारे।
दौरी देह दूबरी हो गइ,
करकें देख उगारे।
गोरे आँग हते सब जानत,
लगन लगे अब कारे।
ना रये माँस रकत के बूँदा,
निकरत नईं निकारे।
इतनी पै हम रजउ खाँ ईसुर,
बनें रात कुप्यारे।

जो कुउ तुमसें प्रीत लगाहै,
सो आँगें फल पाहै।
नासा काट पटोरन पोंछो,
कैसे कैं रूच आहै।
अब का करत पाछ्ली बातें,
जामें कौन मजा है।
जब हम बोलें तब तुम बोलो,
जइ इक बात उजा है।
जौन गाँव जाने नहिं ईसुर,
गली पूछने का है।

❀ ❀ ❀

तुम्हरें कबै क बै हम आये,
तुमरे बिना बुलाये।
हातन हात सँदेश तुमइ नें,
कैउ दारन पठवाये।
आवत देख दूर सें हम;खाँ,
तरे खाँ नैन नवाये।
चाना के हम दास ईसुरी,
चले जायँ अनचाये।

हँसकें परदेसी ना मारौ,
देकें काजर कारौ।
बीच गली में चले जात हैं,
घायल ना कर डारौ।
आन परी बन भूली कोयल,
करहै रैन गुजारौ।
लगा धरौ पानन की बिरियाँ,
सुख की नींदन पारौ।
भोर भैं उठ जेयें ईसुरी,
तकियो अपनो द्वारो।

❀ ❀ ❀

जब सें देखो जौ दिब द्वारो,
रानी रजउ तुमारो।
कुआ करीब, दुगइ दालानें,
देत पारुआ पारो।
मरजी होय इतइ टिक रैवूँ,
करने रैन गुजारो।
उते अस्त दिन भओ ईसुरी,
इते पगन सें हारो।

तुमने राखे मान हमारे,
हुयें भले तुम्हारे।
डेरा दये खास दालानन,
सुख की सेजन पारे।
लगा दईं पानन की बिरियाँ,
सब बातन के उवारे।
होत भोर निग चले ईसुरी,
तकियो अपने द्वारे।

❀ ❀ ❀

फिरतन परे पाँव में फोरा,
संग न छाँड़ौं तोरा।
घर घर अलख जगावत जाकें,
टँगो कँदा पै झोरा।
मारौ मारौ इत उत जावे,
गलियन कैसो रोरा।
नइँ रौ माँस-रकत देही में,
भये सूख कें डोरा।
कसकत नहीं ईसुरी तनकउ,
निठुर यार है मोरा।

तुमसें मिलन कौन बिध होनें,
परकें एक बिछौनें।
बातन बातन कड़े जात हैं,
जे दिन ऐसे नोनें।
प्रानन के घर परी तलफना,
नैनन के घर रोनें।
फर पाइ ना ई ईसुरी,
जे मानुस की जोनें।

❀ ❀ ❀

अब ना होबी यार किसी के,
जनम जनम खाँ सीके।
यार करे का बड़ी बिबूचन,
बिना यार के नीके।
नेकी करतन समझें रैयो,
जे फल पाये बदी के।
ई मानस सें भले ईसुरी,
पथरा राम नदी के।

यारी सदा निबायें रैयो,
बीच बिसर जिन जैयो।
जैसो दिल है हाल दिनन में,
एसोइ राखें रैयो।
सुनकें बात जिया मोरे की,
अपने जिउ की कैयो।
अबै कछू बिगरौ नइँ ईसुर,
बायँ सँमर कैं गैयो।

❀ ❀ ❀

हम खाँ मिलौ न हम सो कोई,
ढूँढ़ फिरे दृग दोई।
जी सें मिलौ कपट ना राखौ,
काँ ऐसो दिल होई?
अपनी अपनी सब मतलब कौ,
मानस बड़ौ अनोई।
ईसुर होयँ कात जो मिथ्या,
ई कौ राम बिचोई।

अपने मन मानिक के लाने,
सुघर जौहरी चानें।
नर तन रतन जतन सें खोलें,
चढ़ो प्रेम खर सानें।
बैंचो ओइ दुकाने जैहे,
जो गुन खाँ पहचानें।
ईसुर कैउ जगाँ फिर हारे,
कोउ धरत ना गाने।

❀ ❀ ❀

बसती बसत लोग बहुतेरे,
कौन काम के मेरे।
बैठे रात हजारन कोदीं,
कबहुँ न जे दृग हेरे।
गैल चलत गैलारे चर्चें,
सब दिन साँझ सबेरे।
हाय दई उन दो आँखन बिन,
सब जग लगत अँधेरे।
ईसुर फिर तक लेते उनखाँ,
बे दिन बिध ना फेरे।

बिध ना दये पापी पंख हमें,
उड़कें मिलते मिंत तुमें।
परबस परे कछू बस नैयाँ,
ज्यों पंछी पिंजरा मुमें।
चोला न्यारौ करौ रामने,
अंतस जानों एक दमें।
केहत ईसुरी सुन लो प्यारी,
दरसन हूहैं कौन समें।

❀ ❀ ❀

अब ना करैं काउ सें यारी,
गरज की दुनिया सारी।
गरज परे के भाई बन्द हैं,
गर्ज के सब हितकारी।
गरज परे के पनमेसुर लुक,
गर्ज के बाप मतारी।
गरदन गरज दये लौं ईसुर,
गर्ज परे की प्यारी।

ऐंगर बैठ लेव कछु कानें,
काम जनम भर रानें।
सबकों लगो रहत जियत भर,
जौ नहिं कबहुँ बड़ाने।
करियो काम घरी भर रै कें,
बिगर कछू नहिं जानें।
जौ जंजाल जगत कौ ईसुर,
करत करत मर जानें।

❀ ❀ ❀

जौ है नदी नाव कौ भेरो,
कउँ हम कउँ तुम खेलो।
मरती बेर धरत अरथी पै,
दिखा न परत दुकेलो।
घर जैबे की घरी आय जब,
एक घरी ना भेलो।
ईसुर कोउ काउ कौ नैयाँ,
सब संसार अकेलो।

रहना होनहार सें डरते,
पल में परलै परते।
पल में राजा रंक होत है,
पल में बने बिगरते।
पल में धरती बूँद न आवै,
पल में सागर भरते।
पल पल की को जाने ईसुर,
पल में प्रान निकरते।

❀ ❀ ❀

बखरी रहियत है भारे की,
दई पिया प्यारे की।
कच्ची भींट उठी माटी की,
छाइ फूस चारे की।
बे बंदेज बड़ी बेबाड़ा,
जीमें दस द्वारे की।
किवार किवरिया एकौ नइयाँ,
बिना कुची तारे की।
ईसुर चाय निकारौ जिदना,
हमें कौन उवारे की।

मनुआँ कौ सम्मन है आयो,
बूढ़े बार दिखायो।
दूजो सम्मन रहै जमानगी,
दाँत हिलत जब पायो।
तीजो सम्मन लाठी लैकें,
कम्मर दर्द करायो
कात ईसुर तोउ चेते,
सोइ वारंट पठायो

❀ ❀ ❀

नैयाँ ठीक जिन्दगानी कौ,
बनो पिण्ड पानी कौ।
चोला और दूसरो नैयाँ,
मानुस की सानी कौ।
जोगी जती तपी संन्यासी,
का राजा रानी कौ।
जब चाहै लै लेय ईसुरी,
का बस है प्रानी कौ।

जौ जिउ जियत राधिका कै कें,
रोज नाव लै लै कें।
चित सें लगा बन्दगी करहों,
चरन कमल गै गै कें।
मो गरीब की टेर लाड़ली,
सुनो कान दै दै कें।
ईसुर चले गये सुरपुर खाँ,
नाव बीज बै बै कें।

❀ ❀ ❀

जिदना खतम होय बड़ खाता,
बुलवा लेय बिधाता।
घड़ी पलक की देरी नाहीं,
सत्य हिसाब कराता।
करना होय सु करलो जग में,
फेर न बो दिन आता।
कहत ईसुरी भज लो रामें,
नइँ पीछें पछताता।

तन कौ कौन भरोसो करने,
आखिर इक दिन मरने।
जौ संसार ओस कौ बूँदा,
पवन लगे सें ढुरनें।
जौ लों जीकी जियन जोरिया,
जी खाँ जै दिन भरने।
ईसुर ई संसार आन कें,
बुरे काम खाँ डरने।

जग में बिना यार कौ को है,
मिलै सु भाग बदो है।
एक यार आमद के पाछूँ,
धन के संग लगो है।
एक यार दयँ प्रान प्रेम में,
प्रीत की फूँद फँसो है।
एक यार बिचधार बवा कें,
बीचइ छोड़ भगो है।
जे सब यार निरख कें ईसुर,
मो मन भौत हँसो है।

रसना क्यों न राम-रस पीती,
परहै धार अचीती।
बिसरी खबर तोय बा दिन की,
जा दिन बात कहीती।
खटरस भोजन पान करत है,
फिर रीती की रीती।
ईसुर भजन राम कौ करना,
यही जगत की नीती।

भज मन राम सिया भगवानें,
संग कछू नहिं जानें।
धन संपत सब माल खजानों,
रै जै एइ ठिकानें।
भाई बन्द अरु कुटुम कबीला,
जे स्वारथ सब जानें।
केंड़ा कैसो छोर ईसुरी,
हंसा हुए रवाने।

रसना राम कौ नाम नगीना,
मन मुदरी में दीना।
नियत निवान, खान सें खोदो,
ऐसो थान कहीं ना।
देत उदोत जोत जैपुर की,
चढ़ो भजन कौ मींना।
दिन दिन देत देह खाँ दीपक,
कबहुँ न होत मलीना।

रसना राम राम नित कौ री,
फिर न पाप खाँ दौरी।
सबरो बदन बाम खाँ बावै,
नाम खाँ बँदत दत्तौरी।
नरकन नफा बाम में पावें,
नामें कात ठगौरी।
ईसुर नाम बाम में भूलत,
तू भ्रम भूत भगौरी।

रामें लयें रागनी जीकी,
लगत सुनत में नीकी।
छैऊ सास्त्र पुरान अठारा,
चार वेद सें झींकी।
गैरी भौत अथाय भरी है,
थाय मिली नहिं ईकी।
ईसुर साँचउँ सुरग नसैनी,
रामायण तुलसी की।

हंसा फिरें बिपत के मारे,
अपने देश बिना रे।
अब का बैठें ताल तलैयाँ,
छोड़े समुद किनारे।
चुन चुन मोती उगले उनने,
ककरा चुनत बिचारे।
ईसुर कात कुटुम अपने सें,
मिलबी कौन दिनारे।

हंसा उड़ चल देश बिराने,
सर बर जायँ सुखाने।
यहाँ रहे की कौन भलाई,
जहाँ बकन के थाने।
उत चल समुद अगम्म भरे हैं,
सुख पावें मन मानें।
बचत बने तौ बचो ईसुरी,
ताने काल कमाने।

चलती बेर नजर भर हेरो,
दिल भर जावे मेरो।
मिला लेव आँखन सों आँखें,
घूँघट तनक उगेरो।
टप टप अँसुआ गिरत नैन सें,
चितै चितै मुख तेरो।
ईसुर कात बिदा की बेरा,
होत विधाता डेरो।

लै लो सीताराम हमारी,
चलती बेराँ प्यारी।
ऐसी निगा राखियो हम पै,
नजर होय न दुआरी।
मिलकैं कोऊ बिछुरत नैयाँ,
जितने हैं जिउधारी।
ईसुर हंस उड़न की बेरा,
झुक आई अँधियारी।

मोरी सब खाँ राधावर की,
भई तयारी घर की।
राते आज भीड़ रइ भारी,
घर के नारी नर की।
बिछुरत संग, लगत है ऐसो,
छूटत नारी कर की।
मिहरबानगी मोरे ऊपर,
सूधी रहै नजर की।
बदी भेंट फिर हू है ईसुर,
आगें इच्छा हर की।

यारो इतनो जस कर लीजो,
चिता अंत ना दीजो।
चलतन सिर कौ गिरै पसीना,
भसम कौ अंतस भींजो।
निगतन खुदैं चेटका लातन,
उन लातन मन दीजो।
बे सुस्ती ना होंयँ रात दिन,
जिनके ऊपर सीजो।
गंगाजू लों मरें ईसुरी,
दाग बगौरा दीजो।

सूचना

पृष्ठ २९ पर निगन के स्थान पर भूल से निनग छप गया है। पाठक उसे निगन पढ़ने की कृपा करें।

परिशिष्ट १

ईसुरी की एक ही फाग कई रूपों में प्रचलित है। पृष्ठ १६ पर जो फाग छपी है उसका निम्नलिखित रूप अधिक सुन्दर है—

बिधना करी देह ना मेरी
रजउ के घर की देरी।
आवत जात चरन की धूरी,
लगत जात हर बेरी।
लागो आन कान के ऐंगर
बजन लगी बजनेरी।
उठन चहत अब हाट ईसुरी
बाट बहुत दिन हेरी।

इसी प्रकार पृष्ठ ५२ में प्रकाशित फाग का एक दूसरा रूप है—

हंसा फिरें बिपत के मारे,
अपने देस बिना रे।
मोतिन के जे आँयँ चुनइया,
ककरा चुने विचारे।
उड़त-उड़त जे पिंड़री थाकीं,
दाबे आन तमारे।
ईसुर समुदन आयँ रवैया,
पुखरन में तन गारे।

परिशिष्ट २

शब्दकोष

पृष्ठ	शब्द	शब्दार्थ
१	परब	ढेरी
	अमी कौ	अमृत का
	काँसें	कहाँ से
	उतै	वहाँ
	झींकौ	खींच लिया
२	तरकुला	कान का आभूषण
	परतन	लेटते समय
	पसर परत	पसर जाते हैं
३	मोये	मोहित हुए
	लमछारी	चिकनी-लंबी

४	कम से	थोड़े, पूरे नहीं
	मोये	मोहित हुए
	भौतक	बहुत ही
	निगन	चाल
	लरम	नरम
६	दावनी	दामिनी, बिजली
	द्बकैला	दब्बू
	मौं ना	मुख पर
	निरौना	निदर्शन दर्शनीय वस्तु
७	सबयार	पूरा, बिलकुल
८	खोरन	गलियों में
११	मुकते	बहुत से
	मुरक	लौटकर
	कायल करन	विवश करने वाली
	जिदना	जिस दिन
	दिवानों	उन्मत्त
	चह	चाहे
१२	कोद	ओर
	ओलें	सिकुड़न
	अलफ	संकट की घड़ी
१४	लवन की खानी	लवों का पिंजड़ा
	बतकाओ	बातचीत

	कवैयाँ	कह्ने को
	कुल्ल	बहुत सी
१६	कानें	कह्ना
१७	काउनें	किसीने
	नैयाँ	नहीं
	काँ तौ	कहाँ तो
	पैलउँ	पह्ले
	मुलकन मैंयाँ	देश-देशान्तरों में
	कोद	ओर
१८	कोदीं	ओर, तरफ़
१९	आँसत	आँसता है, कष्ट देता है।
	कसकन	पीड़ित करने वाले
२०	आहें	हैं
२१	उजरइयाँ	उजड़ने को
	रात	रहता
	पत	पति
२२	संकीरन	संकीर्णता, बिबूचन
	तरैयाँ	नेत्र
	लटी	बुरी
२३	नियरानों	समीप आया
	आगम	भविष्य

२४	टिया	निश्चित दिन
२५	अगन	अगहन
	चय	चाहे
	चाय	चाहे
२६	श्रीफल	नारियल
२७	आहौ	हौ
	साजो	अच्छा
२८	पानें	पानी के लिए
	हर हर बेरे	हर हर बार
	नायें सें	यहाँ से
	मायँ सें	वहाँ से
	बनकें	बिलकुल
२९	ललाते	इच्छा करते
	कोते	स्थान पर
	निगन	चलने में
	निवरन	झुकने में
३०	बिगारन	बिगाड़ने के लिए
	अंत	अन्य स्थान पर, विदेश में
	अगनाई	आँगन
३१	बज्जुर के	वज्र की तरह कठिन
	मुरके	लौटे

	उरके	लटके
	लगनियें	प्रेमी
	तकें रात	देखते रहते हैं।
	एरन सें	आवाज़ से।
	कौरन सें	मकान के कोने से
३२	उसीसें	सिरहाने
	जेवें	भोजन करें
	परसें	परोसें
३३	फारकत हो गये	छुट्टी पा गये
	स्यात	शुभ घड़ी,
	बिरियाँ	समय
३५	ललक	प्रेमाकाँक्षा
	खवा	खिला
	पैल	पहले
३६	साँसन में हो	छिद्रों में से
	ऊसइँ	वैसे ही
	सारौ	सार
३७	ओइ नीम में	उसी नीम में
	सोसन	शोच में
	दौरी	दुहरी
३८	पटोरन	रेशमी वस्त्र से
	उजा	वाजिब

	कैउ दारन	कई बार
	तरे खाँ	नीचे को
	चाना	चाहना
३९	दिब	दिव्य, सुन्दर
	पारुश्रा	पहरुश्रा, पहरेवाला
४०	बिरियाँ	बिड़ी
	उवारे	उकास, आराम
	तकियो	देखना
४१	बिबूचन	मुसीबत
४२	निबायें रैयो	निर्वाह करना
	बाँयँ	हाथ
	अनोई	चतुर
	बिचोई	मध्यस्थ, गवाही
४३	लानें	लिए
	ओइ	उसी
	चर्चे	देखे, पहचाने
	तक लेते	देख लेते
४४	भुमें	घूमता है
	चोला	शरीर
	न्यारा	अलग
	अंतस	अंतःकरण
४५	ऐंगर	निकट

	बड़ानें	समाप्त होगा।
	रै कें	रह कर, रुककर
	भेरो	संयोग
	कउँ	कहीं
४६	जिद्ना	जिस दिन
	उवारे की	उकास की
४७	सानी को	बराबरी का
४८	नाव	नाम
४९	जियन-जोरिया	जीवन-डोर
	भाग बदो है	भाग्यशाली है
४९	मो मन	मेरा मन
५०	अचीती	अनजानी
	केंड़ा	डोरा लिपटी हुई पिंडी जिससे कोरी कपड़ा बुनते हैं।
५१	नियत निवान	नियत को निवाहने वाला, संतोष देनेवाला।
	बाम खाँ	स्त्री के लिए
५३	बकन	बगलों के लिए
५४	बेराँ	समय
	दुआरी	दूसरी
	राते	रात में

लोक-साहित्य पुस्तकमाला की निम्नलिखित
पुस्तकें शीघ्र प्रकाशित हो रही हैं।

:) ईसुरी की फागें, भाग २

:) ईसुरी की फागें, भाग ३

) ईसुरी और उसका काव्य

) बुन्देलखंड की लोककथाएँ—ले॰ श्रीशिवसहाय चतुर्वेदी

) बुन्देलखंड की कहावतें

इत्यादि

लोकवार्त्ता परिषद्
टीकमगढ़ [मध्यभारत]